अभ्यास पत्रक

पाठ: 6 - एक टोकरी भर मिट्टी

नाम :- ..... कक्षा :- ..... अवधि :- ..... अनुक्रमांक :- ..... प्राप्तांक :- .....

---

1. निम्नलिखित बहुविकल्पीय प्रश्नों के सही उत्तर चुनें। (5 अंक)

(i) वृद्धा ने ज़मींदार से मिट्टी ले जाने की अनुमति कैसे माँगी?

(क) अधिकार पूर्वक (ख) गुस्से से

(ग) गिड़गिड़ाकर और विनती करके (घ) चुपचाप जाकर

(ii) टोकरी उठाने में असमर्थ होने पर ज़मींदार को कैसा महसूस हुआ?

(क) गर्व (ख) क्रोध (ग) लज्जा (घ) खुशी

(iii) "ज़मींदार साहब धन-मद से गर्वित हो अपना कर्तव्य भूल गए थे।" - यहाँ 'धन-मद' का क्या अर्थ है?

(क) धन की कमी (ख) धन का अहंकार (ग) धन कमाने की इच्छा (घ) धन का दान

(iv) कहानी का अंत कैसा है?

(क) दुखद (ख) अधूरा (ग) सुखद और प्रेरणादायक (घ) रहस्यमयी

(v) लेखक माधवराव सप्रे की मातृभाषा क्या थी?

(क) हिंदी (ख) गुजराती (ग) मराठी (घ) संस्कृत

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दें। (5 अंक)

(i) वृद्धा की पतोहू (पुत्रवधू) अपने पीछे किसे छोड़कर चल बसी थी?

उत्तर- .....

(ii) झोंपड़ी के अंदर जाते ही वृद्धा को क्या याद आया?

उत्तर- .....

(iii) जब ज़मींदार ने टोकरी उठाने से मना कर दिया, तो वृद्धा ने क्या किया? (यह प्रश्न कहानी की एक विशिष्ट घटना पर आधारित है, ध्यान से उत्तर दें)

उत्तर- .....

(iv) वृद्धा के वचन सुनकर ज़मींदार की क्या प्रतिक्रिया हुई?

उत्तर- .....

(v) अंत में ज़मींदार ने वृद्धा से क्या माँगा?

उत्तर- .....

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें। (3 x 2 = 6 अंक)

(i) वृद्धा की पोती अपनी दादी से क्या जिद कर रही थी?

उत्तर- .....

.....

(ii) कहानी में प्रयुक्त मुहावरे 'बाल की खाल निकालने वाले' और 'थैली गरम करना' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- .....

.....

(iii) ज़मींदार के चरित्र में आए बदलाव को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- .....

.....

4. निम्नलिखित दीर्घ उत्तरीय प्रश्न का उत्तर विस्तार से दें। (4 अंक)

(i) "आपसे तो एक टोकरी भर मिट्टी उठाई नहीं जाती और इस झोंपड़ी में तो हजारों टोकरियाँ मिट्टी पड़ी है। उसका भार आप जन्म-भर कैसे उठा सकेंगे?" - इन वाक्यों में छिपे गहरे अर्थ को समझाइए। वृद्धा केवल मिट्टी के भार की बात कर रही थी या कुछ और?

उत्तर- .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

उत्तर कुंजी (वर्कशीट - 2)

1. बहुविकल्पीय प्रश्न:

(i) (ग) गिड़गिड़ाकर और विनती करके

(ii) (ग) लज्जा

(iii) (ख) धन का अहंकार

(iv) (ग) सुखद और प्रेरणादायक

(v) (ग) मराठी

2. एक वाक्य में उत्तर:

(i) वृद्धा की पतोहू अपने पीछे एक पाँच बरस की कन्या (बेटी) को छोड़कर चल बसी थी।

(ii) झोंपड़ी के अंदर जाते ही वृद्धा को पुरानी बातें याद आ गईं और उसकी आँखों से आँसू बहने लगे।

(iii) ज़मींदार ने पहले मना नहीं किया, बल्कि नाराज हुआ था, लेकिन जब वृद्धा बार-बार हाथ जोड़ने और पैरों पर गिरने लगी, तब वह उठाने को तैयार हुआ।

(iv) वृद्धा के वचन सुनकर ज़मींदार की आँखें खुल गईं।

(v) अंत में ज़मींदार ने वृद्धा से क्षमा माँगी।

3. संक्षिप्त उत्तर:

(i) वृद्धा की पोती अपनी दादी से यह जिद कर रही थी कि वह खाना तभी खाएगी जब वे अपने पुराने घर (झोंपड़ी) वापस चलेंगे। वह कहती थी, "अपने घर चल, वहीं रोटी खाऊँगी।"

(ii) 'बाल की खाल निकालने वाले' का अर्थ है - बहुत बारीकी से तर्क-वितर्क करने वाले या अनावश्यक मीन-मेख निकालने वाले। 'थैली गरम करना' का अर्थ है - रिश्वत देना।

(iii) कहानी की शुरुआत में ज़मींदार एक अहंकारी और संवेदनहीन व्यक्ति था, जो अपनी इच्छा पूरी करने के लिए एक गरीब वृद्धा को बेघर कर देता है। लेकिन कहानी के अंत में वृद्धा के मार्मिक शब्दों से उसका हृदय परिवर्तन हो जाता है। वह एक पश्चातापी और विनम्र व्यक्ति बन जाता है, जो अपनी गलती मानकर क्षमा माँगता है और वृद्धा को उसकी झोंपड़ी लौटा देता है।

4. दीर्घ उत्तरीय उत्तर: (i) इन वाक्यों में वृद्धा केवल मिट्टी के भौतिक भार की बात नहीं कर रही थी, बल्कि उसके पीछे एक गहरा नैतिक और प्रतीकात्मक अर्थ छिपा था।

- **भौतिक भार:** ज़मींदार से एक टोकरी मिट्टी का साधारण वजन भी नहीं उठाया गया।
- **नैतिक भार (अन्याय का बोझ):** वृद्धा का असली आशय यह था कि जब ज़मींदार एक टोकरी मिट्टी का तुच्छ भार नहीं उठा सकता, तो उसने जो पूरी झोंपड़ी (जिसमें हजारों टोकरियाँ मिट्टी हैं) अन्याय और ताकत के बल पर छीनी है, उस अन्याय और पाप का भारी बोझ वह जीवन भर अपने अंतःकरण में कैसे उठा सकेगा? यहाँ "हजारों टोकरियाँ मिट्टी" उस झोंपड़ी से जुड़ी यादों, भावनाओं और उस पर किए गए अन्याय के विशाल बोझ का प्रतीक है। वृद्धा ने बड़ी चतुराई से ज़मींदार को यह एहसास कराया कि भौतिक शक्ति से किसी की चीज छीनना आसान हो सकता है, लेकिन उस अन्याय के नैतिक बोझ को ढोना किसी भी शक्तिशाली व्यक्ति के लिए असंभव है।